पहाड़ों में प्रकृति शिक्षा | मार्फा फ़ाउण्डेशन

माधुर्या बालन

नेपाल की काली गंडकी घाटी में स्थित मार्फा जैसे बला के ख़ूबसूरत गाँव में लम्बे समय तक घर के अन्दर घुसे रहना कोई सामान्य बात न थी। 2016 में मार्फा गाँव में शुरू हुए रोज़हिप्स सेंटर फ़ॉर क्रिएटिव लर्निंग[i] में प्रकृति शिक्षा और प्रकृति की गोद में शिक्षा, प्रारम्भिक शिक्षा पद्धति का मुख्य भाग बनी। बड़े बच्चों के साथ मार्फा फ़ाउण्डेशन[ii] का तरीक़ा रचनात्मक योजनाओं और प्रयोगों के माध्यम से जिज्ञासा, समझ व कौतुक जगाना रहा था। स्थानीय सामग्री का उपयोग, कबाड़ का रचनात्मक पुनरुपयोग और आस-पास के भूगोल से प्राप्त विषयों और सांस्कृतिक परिवेश को परस्पर जोड़ना यहाँ की शैली का अच्छा-ख़ासा हिस्सा था। फ़ाउण्डेशन ने ग्राम्य जीवन से प्रेरणा ली और उसका सम्मान किया।

एक 'मीम' में दो कम उम्र मछलियाँ पानी में तैर रही हैं और उनकी मुलाक़ात विपरीत दिशा में तैर रही एक बड़ी उम्र की मछली से होती है। बड़ी मछली छोटी मछलियों को देख मुस्कराई और बोली, "मॉर्निंग बच्चों! पानी कैसा है?'' तिस पर दोनों बच्ची मछलियाँ थोड़ी देर तक तो तैरना जारी रखती हैं और फिर उनमें से एक दूसरी की तरफ़ देखते हुए कहती है, ''ये पानी क्या होता है?'' यह सवाल इस बात को रेखांकित करता है कि अक्सर हम उन चीज़ों को देखते तक नहीं जो इतने स्पष्ट रूप से हमारे आस-पास रहती हैं। अच्छी शिक्षा अन्य दृष्टिकोणों से देख पाने की क्षमता को समृद्ध कर सकती है और हमारे द्वारा अब तक हल्के में ली जा रही अनेक चीज़ों को बारीक़ी से देखने-गुनने के क़ाबिल हमें बना सकती है।

मार्फा गाँव में चारों ओर फैली हैरतअंगेज़ ख़ूबसूरती अलग-अलग पीढ़ियों के साथ उनकी शिक्षा, उनके मूल्यों और जीवनशैली/ दिनचर्या के हिसाब से अलग-अलग रिश्ते बनाती है। पुरानी पीढ़ी प्रकृति के साथ एक ऐसा तगड़ा सन्तुलन बनाकर रहती थी जिसमें बाहरी दुनिया पर निर्भरता या उसकी दख़लअन्दाज़ी न्यूनतम होती थी। गाँव के नैसर्गिक भूदृश्यों, मौसमों, कृषि और वन प्रथाओं का उन्हें गहरा ज्ञान था। बदलते वक्त, राज्य की सीमाएँ बनने, शिक्षा, देशाटन, बाहरी दुनिया और पर्यटकों से सम्पर्क में आने के चलते पुरानी पीढ़ी पर अपनी जीवनशैली और आजीविका के तरीक़े बदलने का दबाव पड़ा। नतीजतन, होम-स्टे का चलन, सेब की खेती, हर्बल उत्पादों के लिए कच्ची सामग्री उपजाना आदि काम शुरू हुए। टीवी और सोशल मीडिया के माध्यम से सारी दुनिया से रूबरू होती युवा पीढ़ी की आकांक्षाओं का भण्डार एकदम नया-नया है जिसका प्रकृति-आधारित जीवन से कुछ लेना-देना नहीं है।

इस विसंगति को सुलझाना आसान नहीं, ख़ासकर तब जबकि खेतिहर परिवारों और शहर में बस गए परिवारों के बीच सत्ता, सम्मान, पैसे और अवसरों तक पहुँच सम्बन्धी विशाल विषमताएँ हों। फ़ाउण्डेशन ने इसी विसंगति पर ही काम करना चुना। इसके लिए उसने पारम्परिक खेती, त्योहारों व पीढ़ीगत सम्बन्धों जैसी उन स्थानीय प्रथाओं में निहित ज्ञान को फिर से परस्पर जोड़ने के रास्ते बनाए जिन्हें औपचारिक शिक्षा में महत्त्व नहीं दिया जाता। इसने बच्चों का परिचय शिक्षा के कुछ सबसे दिलचस्प साधनों से करवाया — दुनिया भर का सचित्र बाल साहित्य, वैकल्पिक शिक्षणशास्त्र के उपयोग में माहिर शिक्षक और समस्या-समाधान युक्तियों व हस्त-कौशल का उपयोग करने वाले रचनात्मक अभ्यास।

मार्फा एक ऐसा गाँव भी है जहाँ देशज समुदाय व अभी हाल ही में बसे समुदायों बीच एक ऐसा अलगाव है जो ग्राम-लोकतंत्र, भू-स्वामित्व और इसी के नतीजतन पारिवारिक सम्पदा में दिखता है। इस कारण किंडरगार्टन समावेश का एक महत्त्वपूर्ण स्थान बना। यहाँ ग्राम उत्सवों व कार्यक्रमों से इतर सांस्कृतिक रूप से आपस में कभी न मिलने वाले परिवारों के नन्हे-मुन्ने एक-साथ खाते, खेलते, सीखते-सिखाते (और झपकियाँ लेते) हैं।

किंडरगार्टन में सीखने के तीन स्तर थे — प्लेग्रुप, लोअर और अपर किंडरगार्टन। उनके सीखने की जगहों में किंडरगार्टन बिल्डिंग, बग़ीचा, गाँव के खेत, जलधारा, गाँव के बाग़वानी केन्द्र, गाँव के मैदान, सबसे छोटे बच्चों के हिसाब से अन्तिम दो सबसे लम्बी सैर होने के नाते 'सैर-सपाटा' कहलाते।

प्लेग्रुप

2-3 साल के इस आयु समूह के लिए मिट्टी के साथ काम करना महत्त्वपूर्ण था। हमने इस प्रक्रिया में बच्चों को उस हद तक शामिल किया जिस हद तक कर सकते थे — नदिया किनारे और पहाड़ी से अलग-अलग क़िस्म की मिट्टी ले आने से लेकर

उसे इस्तेमाल लायक बनाने हेतु तैयार करने तक। हमने शरीर, परिवार के सदस्यों, पहाड़ों और पेड़ों के बारे में बात करने के लिए मिट्टी का इस्तेमाल किया। हम एक विषय को तमाम तरीक़ों से पेश करते जिससे बच्चों को सुनने, कल्पना करने और सवाल पूछने में मदद मिलती थी।

संग्रह सैर-सपाटे भी उनके सीखने का एक महत्त्वपूर्ण अंग होते थे। यह आयु समूह बहुत बारीक़-बारीक़ चीज़ें ताड़ लेता है। पूर्व-मौखिक शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण विकास चरण है जिसमें सिर्फ़ देखने और छूने भर से ही आश्चर्यजनक मात्रा में ज्ञानार्जन हो जाता है। बच्चों के लिए विषयों में शामिल थे आकाश, बादलों की बदलती शक़्लें और गाँव के बड़े-बड़े जानवर जैसे गायें, घोड़े और गधे।

लोअर केजी

3-4 साल के बच्चे हमेशा अपने शब्द-भण्डार में नए-नए शब्द डालने, सवालों के जवाब ढूँढ़ने और कभी-कभी, अपने प्रयासों पर फ़ौरी शाबाशी पाने को उत्साहित रहते हैं। सीखने-सिखाने के माहौल में वे अपने आस-पास की चीज़ों से जुड़ते हैं और उन्हें मौखिक रूप से व्यक्त करते हैं।

इस समूह के साथ, सीखने के लिहाज़ से बग़ीचा एक सुन्दर जगह था। हमने न सिर्फ़ उन्हें बीज बोने, पौधे रोपने व प्रतिरोपित करने की प्रक्रिया में शामिल किया, बल्कि हम इस अनुभव को जीवनचक्र की अवधारणाओं व उनके अपने आस-पास के जीवों जैसे कि केंचुओं, इल्लियों, मधुमक्खियों और मिट्टी के कीड़ों की परस्पर निर्भरता को समझने तक विस्तार दे पाए। इनके प्रयोग के द्वारा शब्द-भण्डार ही नहीं, अंकगणित तक को भी एक बढ़त दे पाए।

उदाहरण के लिए, सबसे पहले हमने एक कहानी के द्वारा एक खाद्य पौधा पेश किया और बच्चों से पूछा कि वे इसके बारे में क्या जानते हैं। इसे उन्होंने कहाँ देखा है और जब घर में इसकी सब्ज़ी बनती है तो क्या वे उसे पसन्द करते हैं। फिर मौसम के हिसाब से हम बीजों, पत्तियों, सब्ज़ियों या फलों के साथ कोई गतिविधि करते। वह गतिविधि कोई क्राफ्ट, खाना पकाना, पेंटिंग या मिलान करना होती थी। बच्चों के पास अलग-अलग क़िस्मों के बीज अंकुरित करने के लिए अलग-अलग कटोरियाँ होती थीं। इसके चलते उन्हें समझ आया कि कुछ बीज अंकुरित होने के लिए दो हफ़्तों तक का समय लेते हैं, तो कुछेक बीजों के अंकुरण की सम्भावनाएँ बहुत कम होती हैं। इन बाद वाले अनंकुरित बीजों से उपजी उनकी निराशा, अमूमन दूसरी कटोरियों में रखे बीजों को अंकुरित होते और फिर कुछ हफ़्तों में पौधों के रूप में बढ़ते देखने से आनन्द में बदल जाती थी।

अपर केजी

चार-पाँच साल के आयु समूह के बड़े बच्चों के लिए भाषा सीखने पर ज़ोर दिया गया। पहले तो बच्चे औपचारिक तौर पर नेपाली सीखते हैं और फिर उनका परिचय अँग्रेज़ी से होता है।

इन बच्चों की सीखने की जगहें गाँव के खेतों, थोड़ी ज़्यादा लम्बी पैदल सैर और गाँव के बाग़वानी केन्द्र (बोलचाल की भाषा में गाँव में हर कोई इसे 'फरम' कहता था) तक फैली होती थीं। बाग़वानी केन्द्र से ही गाँव वाले बीज, पौधे और सब्ज़ियाँ ख़रीदते। सो बाग़वानी केन्द्र के फेरे न केवल बच्चों को खेती के विभिन्न कामों में रमाए रखते बल्कि उनके बड़े-बूढ़ों और माता-पिता के काम के प्रति एक गौरव व सामाजिक मान्यता का बोध भी देते।

इस उम्र में बच्चे ज़िम्मेदारियाँ उठाने को उत्सुक रहते हैं। जिन घरों में मुर्गियाँ होती हैं, वहाँ के कई बच्चे मुर्गे-मुर्गियों और बकरियों की देखभाल करते थे — उन्हें खाना खिलाते और उनका ध्यान रखते। सो अपर केजी के शिक्षा कार्यक्रम का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा घर भ्रमण होते थे।

खेत भी शिक्षार्जन का महत्त्वपूर्ण पड़ाव होते। विभिन्न ऋतुओं में, पारम्परिक फसल-चक्र को व्यवहार में लाने वाले गाँव के खेतों में से पैदल गुज़रना रंगों को बदलते हुए देखने का एक अनुभव होता था। पौधों की ताज़ा-ताज़ा हरियाली, जौ का आँख सुहाता सुनहरा रंग, कूटू के तेजस्वी गुलाबी फूल, सर्दियों के विशाल हरे-हरे साग, आलू के अगोचर फूल। इन खेतों के भ्रमण और गतिविधियों से बच्चे बड़े खुश होते।

उनके कार्यक्रम का एक और पहलू था — वे गतिविधियाँ व अभ्यास जो उनके सवालों के जवाब देते — लार्वा भला तितली कैसे बन जाता है? कुत्तों व बिल्लियों के बच्चे कैसे होते हैं? हम भला अण्डे क्यों नहीं दे सकते?

निष्कर्ष

शिक्षक के बतौर हमारा मुख्य उद्देश्य सीखने के अनुभवों को ऐसे संचालित करना था जिससे कि बच्चे अपने ही जिज्ञासु, आत्मविश्वासी, जीवन्त, भावपूर्ण और बुद्धिमान संस्करणों में बड़े हों। मार्फा में काम करते हुए इस बात की पुष्टि हुई कि हमारे जीवन का मूल, हम जहाँ रहते हैं उससे रिश्ता बनाना और हमारे इर्द-गिर्द फैले जीवन के प्रति संवेदनशील होना है। ये हमारी संस्कृति के सूत्र हैं जो हमारी विभिन्न पीढ़ियों को परस्पर जोड़ते हैं और हमारे अस्तित्व बोध को सुदृढ़ करते हैं। वह शिक्षा जिसमें प्रकृति से सार्थक शिक्षार्जन शामिल होता है, हमें समृद्ध करती है। अशाब्दिक दृश्य स्मृति और व्यक्तिपरक समय बोध से बच्चों के चहुँमुखी विकास में मदद मिलती है।

नोट : *महामारी के दिन किंडरगार्टन के लिए बहुत कठिन दिन थे। अब चूँकि इस मॉडल को पैसे और लोगों व संसाधनों के रूप में बाहरी समर्थन की ज़रूरत थी, सो लॉकडाउन लगते ही फ़ाउण्डेशन और किंडरगार्टन का मुख्य कामकाज ठप्प पड़ गया। ऐसे कठिन समय में ग्राम समिति को सितम्बर, 2020 में किंडरगार्टन बन्द करने का निर्णय लेना पड़ा।*

Endnotes

i http://marphafoundation.org/kindergarten/

ii http://marphafoundation.org/

माधुर्या बालन को विज़ुअल डिज़ाइन, फैसिलिटेशन और संरक्षण शिक्षा (conservation education) के क्षेत्रों में 10 वर्ष का अनुभव प्राप्त है। उन्होंने नेपाल के अलावा भारत में तमिलनाडु, केरल, उत्तराखण्ड व हिमाचल प्रदेश में काम किया है। उनकी शिक्षण शैली में बच्चों व बड़ों, दोनों के लिए रंगमंच, गतिशीलता, अनुभवात्मक अधिगम व विजुअल स्टोरीटेलिंग जैसे तत्व शामिल होते हैं। सेल्फ स्कॉलरशिप में उनका क्षेत्र उद्गामी अधिगम (emergent learning) के इर्द-गिर्द है। उनसे balan.madhurya@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मनोहर नोतानी **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय